रिकार्ड:- मरना तेरी गली में... ओम शान्ति 6-5-67 प्रात:काल

कच्चों ने गीत का अर्थ सुना कि बाबा हम आपकी रुद्र की माला में पिरोये ही जावेंगे। यह गीत तो भक्ति मार्ग के बने हुये है। जो भी दुनिया में सामग्री है जप, तप, माथा टेकना, भटकना यह सब है भक्ति मार्ग। रावण राज्य। ज्ञान राम राज्य। ज्ञान को कहा जाता है नालेज। पढ़ाई। भक्ति को पढ़ाई नही कहा जाता है। उसमे कोई उद्देश्य नही होता कि हम क्या बनेंगे। भक्ति पढ़ाई नही है। राजयोग सीखना यह पढ़ाई है। पढ़ाई एक जगह स्कूल में पढ़ी जाती है। भक्ति मार्ग में तो दर-दर पढ़ाई कुछ भी नही। भक्ति माना ही दर-दर के धक्के। पढ़ाई माना पढ़ाई। तो पढ़ाई पूरी रीती पढ़नी चाहिये। कच्चे जानते है कि हम स्टुडन्ट है। बहुत है जो अपने को स्टुडन्ट नही समझते है क्यो? क्योकि पढ़ते नही है। ना बाप को बाप समझते ना शिव बाबा को सदगति दाता समझते है फिर भी बैठे है। शरण ली हुई है। ऐसे भी है। बुधी में कुछ बैठता ही नही है। राजधानी स्थापन होनी है ना उसमे कई प्रकार के चाहिये। तुमको मालूम है इस दुनिया में सबसे कम डर्टी ते डर्टी पद कोनसे मनुष्य का है? सबसे जाती दुगर्ति को कौन पाये हुये है? (वेश्याये।) सबसे जाती दुगर्ति को पाये हुई है वेश्यायें। क्यो कि पतित है ना। सबसे जाती पतित है वेश्याये और लम्पट। जो कि अपनी स्त्री को छोड़ कर फिर बाजारी कुत्ते बन जाते है। उनको ही लम्पट कहते है। ऐसे बहुत होते है। बाप आये ही है पतितों को पावन बनाने। इस दुनिया को तो नाम ही है वेश्यालय। सबसे जाती है यह वेश्यायें। इससे ही पतित बनते है ना। मेहतरों का तो वो धन्धा ही है। पतित उनको कहा जाता है तब ही तो बाप को पुकारते है कि आओ। अब बाप कहते है पावन बनो। सबसे गन्दा धन्धा है वेश्याओं का। एक दो को काम कटारी से घायल करते है इसलिये ही बाप कहते है पवित्र बनो। मेहतरों को भी यह समझाना है कि पवित्र बनो। याद करो बाप को। हर एक को पैगाम देना है बाप का इस समय भारत ही वेश्यालय है। शिवालय की अगेनस्ट है वेश्यालय। वो सालवन्ट वो इनसालवन्ट। अब दोनो ताज नही है। यह भी तुम कच्चे ही जानते हो। अब पतित पावन बाप कहते है कि मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। याद में ही मेहनत है। बहुत थोड़े है जो याद में रहते है। भक्ति माला भी थोड़ो की ही है ना। धना-भक्त, नारद, मीरा आद का नाम है। इसमे भी सभी तो नही आकर समझेंगे। कल्प पहले जिन्होने पढ़ा है वो ही आते है। कहते है बाबा हम आप से कल्प पहले भी मिले थे पढ़ने। अथवा याद की यात्रा सीखने। अभी बाप आये ही है तुम कच्चों को ले जाने। समझते है तुम्हारी आत्मा पतित है इस लिये ही बुलाते भी है कि आकर पावन बनाओ। अब बाप कहते है मुझे याद करो और पवित्र बनो। बाप पढ़ाते है फिर साथ में भी ले जावेंगे। कच्चों को अन्दर में गुप्त खुशी होनी चाहिये। बाप पढ़ा रहे है। कृष्ण को बाप नही कहेंगे। कृष्ण को पतित पावन नही कहेंगे। यह किसको भी पता नही है कि बाप किनको कहा जाता है। तो वो फिर ज्ञान कैसे ले दे सकते है? यह तुम्हे जानते हो। बाप ही अपना परिचय कच्चों को देते है। नये-2 कोई से बाप नही नही मिल सकते। बाप कहेंगे सन सोज फादर। कच्चों को ही बाप का यो करना है। कोई से भी बाप ********** ********** को मिलने की बात करने की दरकार नही है। भल इतना समय बाबा बम्बे दिल्ली गये। नयो-2 से मिलते रहे है। ड्रामा में था। नये-2 आते थे। मिलेट्री के लिये भी बाबा ने समझाया है कि उनका भी उधार तो करना है ना। नही भगी दुश्मन वार करेगा। सिर्फ बाप को याद करना है। गीता में है कि जो युध के मैदान में शरीर छोड़ेंगे वो सतयुग में आवेंगे। परन्तु ऐसे तो जा नही सकते है। स्वर्ग स्थापन करने वाला भी जब आवे तब ~~जा~~ जा सके ना। अभी तुम कच्चे पांच विकारों पर, युध करते हो। बाप कहते है अशरीरी भव। अपने को आत्मा निश्चय कर मुझे याद करो। और कोई ऐसे कह नही सकते है। सर्वशक्तिवान सिवाय बाप के कोई को कह नही सकते है। ब्रह्मा को वा विष्णु शंकर को नही कह सकते। आलमाईटी एक ही बाप है। वर्ल्ड आलमाईटी आथारटी एक बाप को ही कहा जाता है। यह जो साधु सन्त है वो है